मैथिलीक नोसिदानी

लेखक—
श्री रेवती रमण झा "रमेश"
ग्राम पो०—पतार (दरभंगा)

मूल्य—अमूल्य

कविता

गाना न० १

ई मैथिलीक नोसिदानी सँ
मैथिलगण लय सुरकैत जाउ।
किछु भेल हो जौं त्रुटि तँ
जुनि नोसि के बिसरैत जाउ॥

ई चुनि चुनि तेजगर पात
मगही तम्बाकुल के बनल।
करु पान सरस रस गाबि-गाबि
दय छीटि मसाला तरुण बनल॥

मिथिला जनक ललने लोकनि
जुनि मैथिली बिसरैत जाउ।
होस करू पुनि होस करू
पुनि-पुनि पिछरल ससरैत जाउ॥

बाल्मीकि तुलसी कबि जी जौं
नहि करितथि लीखिकय विख्यात।
सीताराम विष्णु कृष्ण शिव
नहि प्रचलित ई होयत बात॥

कवि कोकिल रसखान मैथिलीक
विद्यापति कवि हरिपति जी

पंडित जतय मंडन लखिमा
वीर हरि सिंह शिव सिंह जी ॥

उठू उठू आई युवक वृन्द
मिथिलाक मैथिली धरै चलू।
सोर करू पछिलो पिछड़ल के
दय जान जान कय बढ़ै चलू ॥

❀ तिलक दहेज ❀

गाना न० २

सुनु ललिते मैथिल के ललने मिलि मिथिला उद्धार करु।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥

तिलक प्रथा थिक वृथा ग्लानि ई
लज्जा हमरा पाग के
नव पुष्प कें खोलि कली सँ
प्रकटित करू पराग के

करु मिथिले बिख्यात एकर मिलि प्रथा विरोध प्रचार करू।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥

रंग विरंग अंग रंग सँ
तरुण ललित ई देह में
ललित कपोल युगल कंचन कुच
उठल उरोज सं गेह में

नव कली के देखि पराभव प्रकटित ललन पराग करू।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू।

जहि मिथिला कें मातृभूमि सँ
श्री जानकी बहिन एलीह
श्री लखिमा ठकुराइन गारगी
आदि रत्न के खान छली
मण्डन मिश्र विद्यापति चन्दा आदि रत्न कवि नाम धरू ।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥
दया करू मिलि नव कुमारि पर
तोरि चलू ई नाग के
करू विरोध अन्याय प्रथा के
प्रफुलित करू ई बाग के
'रमण' बचन मृदु बोल विलक्षण मिलि मैथिल सम्मान करू ।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥

गाना नं० ३

(तर्ज—दिल लुटने वाला ···)

चलु सुन्दरि ससरि शयन शशि सँ तरु प्रकटित पुष्प पराग करू ।
सजलो नहि शयन सूहागिन सँ
सुख मीन मलीन की नीर बिना
पट घूँघट चीर उघारि लिय प्रियतम पति प्रीति सँ नेह करू ।
चाँदो केर मुँह मलीन केने
किए गात एना सकुचीने छी
बाजि लिय बड़ राति भेलै उर मंडित प्रियतम हाथ करू ।

बिनु यौवन गात बिना यौवन
सौ योजन प्रियतम दूर जेना
नयन मलिन और रैन बिना चलू शयने संगम तीर करू।
नहि काज चलत तन लाज भेने
चुम्बक सन हृदय के कठोर केने
बुझले की "रमण" छिरिआय रहव ताम्बूल तवक शुभ दान करू।

गान न० ४

(तर्ज—ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर····)

ई नोरक बुन्द स्याही सँ हृदय एक शुद्ध कागज पर
ई हम्मर हाथ सँ लिखल प्रथम मम आउ स्वागत पर
प्रतिष्ठा पाएब नहि रुसने
फुलौने मुँह सासुर सँ
कुलिस निष्ठुर कठोरो कय हृदय पाथर बनौने छी
को सासुर पायव पुनि दोसर
अपन बहिनी सँ कयने छी
वसन्तिक डाढ़ि नव अंकुरित कियेक पतझार कयने छी
सुहागिन प्रेम घातक सँ
बरायव पाप के भागी
अमर सन्देश सिर सिन्दुर कमल कर सँ लगौने छी
ई सासुर शशि सरस सौरभ
कतय पुनि पायव शैली ई

तरुण रस पान नहि कयलयि तिनक फूटल अदृष्टे की
करू किछु ध्यान कखनो की
पधारू स्वर्ग सासूर कँ
"रमण' बचनो सुफलँ ओझा करू प्रकटित परागो की।

गाना न० ५

(तर्ज—मानू मानू मानू ओझा.... —

सपथ दय लिखे छी ओझा मानू मोर बात यो।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो॥
मलिन सरोज बिना रवि जल में
मलिन चकोर बिना शशि पल में
हमरो मलिन नित आहाँ बिनु गात यो।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो॥
केहेन कठोर चित्त हृदय बनेलियै
पंकज जलबिनु भ्रामर केलियै
बेकल जेना हम आँधी बरसात यो
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो।
दुरुखा सँ नित बाट तकै छी
सुनि घण्टी निज चौंकि उठै छी
काढ़ि कसीदा नित सीवि फुल पात यो।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो॥
नहि होयत धन ससुर के देने

जौं नहि होयत अपन कमोने
"रमण" बचन मृदु मानू ओझा बात यो।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबे परात यो॥

गाना न० ६

(तर्ज बार बार तुझे क्या समझाऊँ....

आजु हमर प्रियतम हे सजनी जयताह अपनो गाम,
पहु विनु सजनी लागे मोरा जीवन झमान
नाजुक कली सुखायल सजनी आजुक साँझक बेला
प्रेमक प्रीति बिछा पहुँ सजनी तीर बेधि चित गेला
सुनि ई चैन ने पाओल सजली हृदय में छूलक वाण।
कापर करब श्रृंगार पिया नहि पाओत हे
कोना कय खेपव राति नींद नहि आओत हे
आजु नहि किछु भावय सजनी लागय अपन विरान
ने सटबै हम आई सँ टिकुली काजर किनु नैन सुखेबै
फेकव अपन श्रृंगारक पेटी कापर सुभग सजेबै
तेलक विना सुखेबै केसो हमरो बात प्रमाण॥
करु श्रृंगार नयन सँ देखव ज्ञान करू
मिलत कंत पहु सुन्दरि पुनि सतोष धरू
कहथि 'रमण" विचारि सोचि पुनि सुन्दरि करु ज्ञान॥

गाना न० ७

(तर्ज—दू घैला छो हाथ में....)

दू चोटी लागल फूल छो बयस तरुण अनुकूल ।

मातलि पूर्ण पयोधरि कुच सँ, सम्पति अर्जल मूल छौ ॥
पायल के झनकार शब्द पर गनि गनि डेग चलै छै गे ।
हस्थि गमन सम डेग डेग पर नूपुर संग गवै छै गे ॥
नयन विराजित जाल छौ, युवक बृन्द पर ख्याल छौ ।
सोलह सालक समय विता कय शैवन यौवन तूल छौ ॥
मधुर वसन्तक किसलय कोढ़ी तरुणी सदाय रहै छै गे
विकसित कलीक मधुर रस सं नित गुंजित भ्रमर पवै छै गे
अधर लाल मुँह कीर छौ केहन बनल तकदीर छौ ।
छाड़ि लाज नहिं नेत्र तकै छै सकोचक निर्मूल छौ ॥
देहसि रूपक वर्णन कय कवि कोटि चन्द्र पल हारौ गे ।
चित मोहित पल कमल नयन ई तृण सम चुम्बक टारौ गे ॥
मस्त जवानीक जोर छौ नवीन चलित समतोर छौ ।
'रमण' सदा चित हृदय मिलित उर भ्रमन करैत भय धूल छौ ।

सदा याद रखें

रमण स्टोर

पेन की स्पेसल लुज ईंक, कॉपी, कागज, फाइल, डायरी
स्टेशनरी का पूरा सामान एव पेन के एक मात्र
विक्रेता तथा अन्य आवश्यक सभी
सामान उचित मूल्य पर रमण
स्टोर आनन्दपुर में
पधारें ।